मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
बी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8 | बृहस्पतिवार 10 सितम्बर 1981 | संख्या 5

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

दिनांक ११-५-१९८१

मित्रो ! मैं हिन्दू था । बचपन से राम या मालिक की खोज में महाराज शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में गया । उन्होंने मुझे गुरुमत की शिक्षा दी । मैंने जो कुछ समझा वह बताता हूं । महर्षि जी की वाणी है :—

गुरु हुए संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो,
छोड़ दो पाखंड को, गुरु मत की महिमा जान लो ।
गुरु है ब्रह्मा, गुरु है बिष्णु, गुरु ही शिव के रुप हैं,
ब्रह्म गुरु, परब्रह्म गुरु है, गुरु को सब कुछ मान लो ।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ज्ञान है आधार गुरु के, भक्ति गुरु के आसरे,
गुरु के सनमुख जाके तुम, सद्‌गुरु से नाम का दान लो।
आया शुभ अवसर न इस, अवसर को छोड़ो हाथ से,
गुरु से मिल कर जीते जी, कैवल्य पद निर्वान लो।
राधास्वामी की दया से, गुरु की आई अब समझ,
जन्म को कर लो सुफल, निज रूप को पहचान लो।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु और गुरु शिव कैसे हुए ? गुरु नाम तो समझ, विवेक और ज्ञान के भेद का नाम है। ब्रह्मा क्या करता है ? ब्रह्मा सृष्टि रचता है। सृष्टि जब भी रची जाती है संकल्प से रची जाती है। जब तक कोई व्यक्ति संकल्प नहीं करता, ख्याल नहीं करता और वासना व आशा नहीं रखता तब तक कोई काम नहीं होता। अत: यह मानना पड़ता है कि इस संसार का निर्माता एक महान् व्यक्ति है, जिसे पुरुष कहते हैं। उस पुरुष का शरीर भी है, मन भी है और आत्मा भी है क्योंकि इन चीज़ों के बिना वह संकल्प नहीं कर सकता। शास्त्र भी यही कहते हैं कि यह पृथ्वी उस विराट् पुरुष का शरीर है, अव्याकृत उसका मन है और हिरण्यगर्भ उसका आत्मा है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

तो गुरु ब्रह्मा क्या हुआ ? यह मुझे पता नहीं कि दाता दयाल या ऋषियों के यह कहने का क्या भाव है। गुरु ब्रह्मा से मैंने क्या समझा ? कि जितनी यह सृष्टि है यह वासना की है। आशा से सृष्टि बनती है। जो कुछ हमारे साथ बीतेगा वह हमारी अपनी आशा व वासना का फल होगा। अतः हमें अपनी आशा, इच्छा व वासना को अच्छा व ठीक रखना चाहिए। मैं सोचता हूं कि मुझे जो गुरु ज्ञान मिला वह मैं क से लेकर ख तक परमार्थ, स्वार्थ व गृहस्थ के बारे सब कुछ कह जाऊंगा। आप सुनो, अमल करो या न करो, इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। आज आपको गृहस्थ जीवन की बातें बताता हूं। मुझे सबसे पहला गुरु ज्ञान क्या मिला ? सबसे प्रथम ग़लती जो हम खाते हैं, वह यह है कि हम सन्तान को सन्तान के विचार से अच्छी वासना रख कर पैदा नहीं करते। अतः आजकल हमें दुःख हैं। नवयुवक लड़के, लड़कियां क्या कुछ नहीं कर रहे। वे माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते तथा ग़लतियां करते हैं। वह ग़लतियां क्यों करते हैं ? क्योंकि जो बच्चे पैदा हुए

हैं Uncalled for children हैं अर्थात् विना बुलाये हुए बच्चे माता के पेट में आये हुए हैं। अतः आपकी वासना हो खराब है। आप शराब पी लेते हो और विषय के लिए औरतों के पास जाते हो। जिस प्रकार के संस्कार माता-पिता के होते हैं, जिस आशा को लेकर वह भोग करते हैं वही जज़बात (भावनाएं) बच्चे में जाते हैं।

आप इसके प्रमाण के बारे कहोगे ? मैं दूसरे व्यक्तियों का प्रमाण नहीं देता बल्कि स्वयं के अनुभव की बात कहता हूं और स्वयं ही का उदाहरण देता हूं। मैंने एक लड़का अच्छी व योग्य सन्तान के विचार से पैदा किया । वह आजकल 2100 रुपया वेतन लेता है । बचपन से लेकर आजदिन तक मुझको यह अवसर नहीं मिला कि थप्पड़ मारना तो दूर मैं उसको ओय भी कह सकूं। वह बहुत नेक तथा आज्ञाकारी है। साथ ही जहां मैंने ग़लतियां खायीं वह भी बता देता हूं । मैंने भी खुदरो (बिन बुलायी) सन्तान पैदा की मगर मालिक ने मुझ पर बड़ी दया की कि वह मर गई। केवल दो बच्चे ही शेष रहे।

पहला बच्चा जब पेट में आया तो मैं चाहता था कि मेरा बच्चा ऐसा हो जो न कामी हो, न क्रोधी हो, न लोभी हो, न मोही हो तथा न ही अहंकारी हो। यही बात मैंने दाता दयाल को लिखी थी। उन्होंने कहा— जैसा तुम्हारा विचार है वैसा हो जायगा। वह लड़की पैदा हुई। अब वह पैंसठ वर्ष की है। नीम (अर्ध) उन्मत्त है। मैंने उसकी शादी भी की लेकिन उसके पति ने उसे बसाया नहीं। भाई आता है, मैं आता हूं। जब कहते हैं सुरतो! यह ले ले, वह कहती है— मेरे पास बहुत है। जब उसकी माता मरी तब वह अपने रिश्तेदारों के आने पर तो रोती थी लेकिन यदि कोई सत्संगी आये तो और औरतें रोती थीं वह नहीं। मैंने उससे उसके न रोने का कारण पूछा? उसने यह उत्तर दिया— अपने हों तो दुनियादारी के लिए रोना होता है, दूसरे लोगों के लिए क्यों रोना होता है। इस लिए मैंने गुरु ब्रह्मा के बारे आवाज उठाई है कि सन्तान को अच्छी सन्तान के ख्याल से पैदा करो। यह माताएं ही हैं जो देश को बनाने वाली हैं। कोई नेता देश को नहीं बना सकता। यदि नेता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वना सकते तो महात्मा गांधी बना जाते । बड़े-२ नेता आये लेकिन दुनिया का जैसा हाल है वैसा ही है ।

अब प्रश्न यह है कि अच्छा भई, जो हो गया सो हो गया अब क्या किया जाय ? इसके लिए यह है कि बच्चों को बचपन से अच्छी Initiation दी जाये, अच्छे पुरुषों के सत्संग से सस्कार दिया जाये, इस संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार कहते हैं । इस संस्कार से जैसे खट्टे को मीठे का पैबन्द लगा दो तो वह मीठा तो नहीं होगा मगर संतरा या मुसम्मी अवश्य बन जायगा । उदाहरणतया मैं आपको अपने जीवन का अनुभव बताता हूं । मेरा छोटा भाई था जिसका नाम ढेरूमल्ल था । जब वह पांचवीं कक्षा में पढ़ता था तो मैं उसे दाता दयाल के पास लाहौर ले गया । दाता ने मुझको पूछा— यह कौन है ? मैंने कहा— जो मेरा भाई है । उन्होंने मेरे भाई से पूछा— तुम्हारा क्या नाम है ? उसने उत्तर दिया— जी ढेरूमल्ल । कैसा बुरा नाम रखा है । मैंने कहा— जी मैं पहला लड़का हूं;

यह अन्तिम लड़का है । बीच में जो बच्चे हुए वे सब मर गये। अतः मेरी मौसी ने जब यह पैदा हुआ तो मिट्टी के ढेर पर रख दिया ताकि यह बच जाये । दाता कहने लगे— नाम संस्कार ही खराब है । मैंने कहा— आप इसका नाम बदल दें। उन्होंने कहा—अच्छा, प्रातः बदल दूंगा। प्रातः जब समाधि से उठे, उसको बुलाया तथा कहा तुम्हारा नाम सुरेन्द्र नाथ अर्थात् देवताओं का राजा इन्द्र उसका भी मालिक है। कुर्सी पड़ी थी। कहने लगे—इसे कुर्सी पर बिठा दो। हम उनके सामने कुर्सी पर नहीं बैठते थे। मैंने बैठने से इन्कार किया। उन्होंने कहा— नहीं, लड़का कुर्सी के लिए आया है, इसे कुर्सी पर बिठा दो। उस पर इसका यह संस्कार पड़ा कि वह Non Matric लड़का था, रायसाहिब की पदवी पायी। वह Traffic Manager of the Railway हो गया । वह 2000 रुपये वेतन लेकर रिटायर्ड हुआ । जब वह पढ़ता था, मुझे देखकर नाम लेने लाहौर दाता के पास चला गया। दाता ने नाम दे दिया। उन्होंने कहा— तुमने नाम नहीं जपना।

तुम्हारे लिए क्या है ? तुम्हारे लिए जीवन का अर्थ काम और काम का अर्थ जीवन है । सोलह घण्टे काम करो, छः घण्टे सोओ एक घण्टा सुबह, एक घण्टा शाम आवश्यक कार्यों के लिए रखो और अपने जीवन में हाथ ऐसे नहीं ऐसे करना अर्थात् हाथ लेने के लिए नहीं फैलाना बल्कि किसी को देने के लिए करना। पिछली आयु में मेरी गोद में आ जाओगे । उस लड़के ने सारा जीवन उनकी आज्ञा का पालन किया । पिछली आयु में संन्यासी हो गया तथा फिर वह अभ्यास की ओर आ गया। यह नाम का संस्कार है । अब गुरु विष्णु है। विष्णु क्या करता है ? विष्णु संसार का पालन करता है । यह हमारे विचार की शक्ति है कि विष्णु संसार का पालन करता है । क्योंकि विचारों का प्रभाव पड़ता है । अत: 'शिवसंकल्पमस्तु' यह वेद मार्ग है । सदैव अपना संकल्प अच्छा रखो, सदैव आशावादी रहो अर्थात् Optimistic रहो, बुरी बात व नकारात्मक विचार कभी मत सोचो । इसीलिए हमारे ऋषियों ने सोलह संस्कार रखे हुए हैं। वह संस्कार क्या होते

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हैं ? वह संस्कार व्यक्ति को विचार देते हैं। पृथ्वीनाथ जी आचार्य बन कर काम करते हैं। उनको परामर्श देता हूं कि किसी भी सत्संगी को निराशावादी विचार मत दो। सदैव आशावादी विचार दो। विष्णु का दूसरा रूप हमारी पाचन शक्ति (digestion power) हैं। यदि पाचन शक्ति खराब हो जाये तो मानव का सर्वस्व खराब हो जाता है। विष्णु की पूजा करने से आपका कल्याण नहीं होगा। विष्णु की पूजा यह है—कि अपनी पाचन शक्ति को सदैव ठीक रखो इतना खाओ जितना पचा सकते हो। जितनी अधिक बीमारियां हमको आती हैं वह Over eating से आती हैं।

अब गुरु शिव रह गया। शिव क्या करता है ? शिव संसार का संहार करता है, नाश कर देता है तथा ज्ञान देता है। हम संसार में आते हैं। लाख हम आशावादी बनें एक समय आ जायेगा जब हमारी मृत्यु आ जायेगी। जिस को शिव गुरु मिल जाता है वह आशावादी रहता है। अच्छे विचार रखते हुए भी यदि कोई संकट उस पर आ जाता है तो वह यह

समझता है कि यह संसार ऐसा ही है। एक दिन चलना ही है। अतः उसे उदासी या उपरामता नहीं आती। इन तीन बातों के ज्ञान से क्या होता है? मानव का जीवन प्रसन्नता, आराम और प्रेम से गुजरता है। यह गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु शिव कहने का सारांश बिना किसी संस्कृत की पुस्तक और वेद मन्त्र पढ़ने के, संक्षेप में आपको बता दिया। अब तुम सोचो कि तुम कौन हो? या मैं कौन हूं? आज इस मन रूपी चक्कर में आकर कोई महात्मा बनता है, कोई गुरु बनता है, कोई प्रधानमन्त्री बनता है, कोई कुछ बनता है। क्या कोई सोचता है कि हमारा आदि क्या है? कोई नहीं सोचता। हम सारे के सारे कहाँ से आये हैं? हम मां के पेट में से आये हैं या नहीं। माता के पेट में कौन आया? पिता के वीर्य का एक कीड़ा आया। वह कीड़ा किस से बना? रक्त से बना। रक्त भोजन से, भोजन सूर्य और ग्रहों के प्रकाश से बनता है। यदि सूर्य का प्रकाश न पड़े तो कोई वस्तु पैदा नहीं हो सकती। अतः उस कीड़े के अन्दर क्या वस्तु है? प्रकाश है; नूर है। व

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम्हारा और हमारा आदि है। वास्तव में हम प्रकाश में ब्रह्म हैं। सब कहते हैं कि जीव ब्रह्म है। मगर केवल यह कहने से कि मैं ब्रह्म हूं, ब्रह्म हूं, व्यक्ति ब्रह्म तो नहीं बन सकता। ब्रह्म कब बनोगे ? जब तुम अपने अन्तर में जाकर के अपने आप को शारीरिक और मानसिक भानबोधों से भिन्न कर लोगे। जब तक कोई व्यक्ति साधन करके शारीरिक अनुभवों और मानसिक अनुभवों को नहीं छोड़ेगा वह प्रकाश रूप नहीं हो सकता। यही बात बाबा सावनसिंह जी कहा करते थे— कि दस द्वार पार करो तो आगे सद्गुरु खड़ा है। वे दस द्वार क्या हैं ? पांच कर्मेन्द्रियां या शारीरिक बोध-भान और पांच ज्ञानेन्द्रियां या मानसिक बोध-भान हैं। फिर गुरु कौन हुआ ? गुरु ज्ञान और समझ है। यह बाहरी गुरु से लेकर अपने आप संसार में रहते हुए गुरु ब्रह्मा के नियमों के अनुसार अपना जीवन गुजारते हुए और गुरु विष्णु के हिसाब से अपने आप को आशावादी (Optimistic) रखते हुए अपने जीवन को प्रसन्नता से गुजारो तथा यह विश्वास रखो कि 'जो उपजे सो विनसे' अर्थात् जो जन्मा है वह एक दिन विनस (मर) जायेगा, यह गुरु शिव है। फिर कहां जायेंगे ? गुरु ब्रह्मा अर्थात् प्रकाश में

जायेंगे। तथा यही गायत्री मन्त्र है—ओम् भू भुव: स्व: तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न:प्रचोदयात्। अर्थात् जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति, से परे जो प्रकाश है उसके दर्शन करो, वह तुम्हारी बुद्धि का प्रेरक होगा। जो व्यक्ति अभ्यास करता हुआ प्रकाश के अन्दर साधन करता है, प्रकाश में आता है उसको क्या मिलता है ? उसे विवेक शक्ति मिलती है तथा उसको अनुभव और ज्ञान शक्ति पैदा होती व बढ़ जाती है। वह व्यक्ति Man of wisdom हो जाता है। मैंने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। नयी से नयी बात बताता हूं। मैं ऐसा क्यों बताता हूं ? क्योंकि मैं प्रकाश और शब्द का साधन करता हूं। यह गुरु ब्रह्मा है। ब्रह्म के भी चार लोक है— सबलब्रह्म, शुद्धब्रह्म, पारब्रह्म और शब्दब्रह्म। वह प्रकाश जो हमारे शरीर में रहता है तथा हमारी शारीरिक शक्ति है, उसे सबलब्रह्म कहते हैं। वह प्रकाश जो हमारे मन में रहता है तथा वहाँ शान्ति देता है, वह शुद्धब्रह्म है। वह प्रकाश जो हमारी आत्मा में रहता है उसे पारब्रह्म कहते हैं। तथा इससे आगे शब्दब्रह्म है। आप इसको शायद

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

न समझ सकें। मैंने समझा दिया, अब अमल करना आपका अपना काम है। मगर क्योंकि मन बहुत चंचल है, ऊपर नहीं ठहरता, इसको ठहराने और काबू करने के लिए यह नाम दान है। अजपाजाप, ध्यान और भजन है। मन सदैव भोजन से बनता है, मेरी इस बात को स्मरण रखना। जिस प्रकार का अन्न आप खाते हैं उसी प्रकार का प्रभाव आपके मन पर पड़ता है। इसीलिए हमारे यहाँ शराब और मांस खाना मना है। बल्कि ब्राह्मण लोग तो प्याज और लहसुन तक नहीं खाते थे। वे क्यों नहीं खाते थे? क्योंकि इनसे Passionate ideas (कामांग के विचार) पैदा होते हैं। ध्यानशक्ति एक ऐसी वस्तु है जिससे कि कठिन से कठिन बात हल हो जाती है। सुमिरन, ध्यान जब भी करो किसी आशा को रखकर करना चाहिए। यह आशा चाहे धन के लिए, चाहे मन की शान्ति के लिए करो। जिस इच्छा व विचार को लेकर ध्यान करोगे वह इच्छा पूर्ण हो जायेगी तथा जो मांगोगे वह मिलेगा। मैं तुम्हें रामायण या गीता नहीं पढ़ाता बल्कि मैं आपको क्रियात्मक जीवन की वह बातें बता रहा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हूं जिससे तुम अपने जीवन को स्वयं बना सको। कई लड़कियां कुंवारी होती हैं उनको पति नहीं मिलता, मैं उनको कहा करता हूं कि तुम ध्यान किया करो और यह आशा किया करो कि तुम्हें अच्छा घर, अच्छा वर मिल जाये। जब तक सुमिरन, ध्यान नहीं बनता इस मन को काबू करने के लिए अच्छी संगति में रहो। किसी शान्त महापुरुष जिसका मन स्वयं में हो, निर्बन्ध हो, अपने निजी स्वार्थ के लिए सत्संग न कराता हो उसकी संगति करो तथा उससे प्रेम करो। उसकी Rediation से लाभ पहुंचता है, उसके सत्संग में जाने से विचार बदल जाते हैं। फिर जब आप अभ्यास करोगे आपको सफलता मिलेगी। किसी Realized Soul जो स्वयं क्रियात्मक हो उसकी संगति में जाकर बैठो, उसकी बात को सुनो और समझो। जो समझ आप को मिली है उस समझ के अनुसार अपना जीवन गुजारो। यह गुरुमत है। वरना प्रेम के भाव में आकर केवल मस्तक निवाने से एक कल्पित लाभ अवश्य होगा लेकिन परमार्थ नहीं मिल सकता।

परमार्थ क्या है ? परमार्थ अर्थात् हमारे जीवन

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

का सबसे बड़ा उद्देश्य क्या है ? हम जीवन में क्या चाहते हैं, क्या कभी किसी ने सोचा है ? मानव के पास सब-कुछ है, ठीक है। धन भी है, पत्नी भी है, इज्जत भी है, मान भी है तथा सन्तान भी है फिर भी वह कुछ चाहता है।

वह क्या चाहता है ? यह सोचो। तुम सारा दिन काम करते हो, आखिर में क्या चाहते हो ? जीवन में सब-कुछ प्राप्त है लेकिन यदि रात को नींद न आवे चाहे आपके पास लाख रुपया है, सब व्यर्थ है। हम रात को सोना चाहते हैं। सोने से क्या होता है ? सोने से मन के सभी विचार भूल जाते हैं। अतः परमार्थ क्या है ? इस संसार के, मन के झमेले को भूल जाना तथा अपने आप को शान्तमय बनाना ही परमार्थ है। परमार्थ इसके अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु नहीं। इसके लिए सन्तों ने यह नाम दान दिया हुआ है। इसके द्वारा मानव अपने आप को at will अर्थात् उस अवस्था में ले जाता है जहां मानव सब कुछ भूल जाता है। To go to Sound Sleep at will इसका नाम समाधि है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आप समाधि लगाते हैं। समाधि में क्या करते हैं ? भूलते ही हैं, न। अपनी इच्छा से अपने आप को शारीरिक तथा मानसिक बोधभानों से छुड़वा कर अपने रूप में ले जाना व उस परम अवस्था में चले जाना, परमार्थ है। दूसरे शब्दों में साधन करके अपने आप को ऐसी अवस्था में ले जाना, ऐसा साधन करना जिससे हम अपनी इच्छा से अपने ख्यालात, विचारों तथा मन को स्वयं छोड़ सकें। यह तो रोचक और भयानक बातें कह-कह कर बात का बतंगड़ बना दिया है तथा लोगों को अपने पीछे लगा लिया गया है। मैंने बिलकुल सरल शब्दों में आपको बता दिया कि संसार को भूल कर अपने आपे का ज्ञान रखना ही परमार्थ है।

आज मैंने गृहस्थ और दुनिया के लिए आपको बहुत कुछ कह दिया। निर्मला ! मैं एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी को अनुभव करता हूं। निर्मला ! तू मुझसे प्रेम करती है। मैं चाहता हूं कि तू मेरी बात को समझे। गुरु तेरे अन्तर

रहता है । गुरु ज्ञान का नाम है । बाहर कहां भटकती फिरती है ।

घट में है बाहर नहीं लानत ऐसी जिद,
तुलसी इस संसार को हुआ मोतिया बिंद ।

सारा जीवन बाहरी गुरु के साथ ही लगे रहना उचित नहीं । बाहरी गुरु के पास जाकर के उससे समझ लो, उससे ज्ञान लो तभी तुम्हारा कल्याण होगा । कई कहते हैं कि जिसे गुरु मरते समय आकर ले जाता है उसे मोक्ष मिल जाता है, यह झूठ है । अन्त समय में जो गुरु तुम्हारे सामने आयेगा वह बाहरी गुरु नहीं बल्कि तुम्हारे मन का माना हुआ गुरु होगा । अत: आप मन से नहीं निकले । अत: तुम्हारा आवागमन समाप्त नहीं होगा । हां, अच्छी योनि मिलेगी ।

सन्तों का सत्संग ऊंचा व आध्यात्मिकता का होता है । आज का सत्संग आध्यात्मिकता का नहीं है । मैं कहता हूं कि जिसका गृहस्थ ही नहीं बना वह आध्यात्मिकता को क्या करेगा ? जो इस जीवन

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

में दु:खी होकर मरा तथा वह यह आशा करे कि उसे आगे जाकर सुख मिल जायेगा, यह ग़लत है। पहले अपने इस जीवन को बनाओ अर्थात् अपने स्वार्थ को बनाओ। हमारे घरेलू जीवन बहुत कठिनाइयों में हैं। मेरे पास जितने दु:खी आते हैं, सब ऐसे हैं जिनका ब्रह्मचर्य गिरा हुआ है, खुदरो सन्तान पैदा की हुई है; पत्नी दनदनाती है, बच्चे भी दनदनाते हैं तथा हम दु:खी हैं। अत: पहले अपने संसार को बनाओ, यह सच्ची बात है। शेष कल।

कश्मीर में प्रवचन, भाग-2

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, श्रीनगर ।

दिनांक १९-५-८१

मैं क्या कहूं; मुझ से क, ख, ग पढ़ाया नहीं जाता। मैं ऊंचे चला गया हूं । जहां जाता हूं कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है। कोई कहता है मैं रोगी हूं, कोई कहता है कुछ है। कई प्रकार के रोगों वाले व्यक्ति आते हैं। यह कष्ट क्यों आते हैं ? यह सब हमारे मन के विचार ही हैं। हम अपने मन से स्वयं दुःखी होते हैं मन से स्वयं सुखी होते हैं। सारा खेल हमारे मन का है। कभी हम किसी वस्तु को पाकर प्रसन्न हो जाते हैं जैसे आज हम शादी करते हैं तो बड़े प्रसन्न होते हैं

लेकिन दो वर्ष पश्चात् पत्नी से नाराज़ हो जाते हैं या पत्नी नाराज़ हो जाती है तथा आपस में अनबन हो जाती है। यह मन का ही खेल है और कुछ नहीं। किसी को हम अपना समझ लेते हैं, वह विमुख हो जाता है जिस से हम दु:खी हो जाते हैं। यह सारा झगड़ा इस मन का है। मैं स्वयं इस मन से दु:खी रहा हूं। यह मन कभी कुछ चाहता है, कभी कुछ चाहता है। कबीर साहिब एक जगह लिखते हैं :—

मन को मारूं पटक कर, टूक-टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर, लुनता क्यों पछताय।

वह कहते हैं कि यह मन ऐसा है कि अगर मेरे हाथ आ जाये तो इसे पटक कर ऐसा मारूं कि टुकड़े-टुकड़े हो जाये, क्योंकि यह तरह-तरह के विचार सोचता रहता है तथा स्वयं सुख-दु:ख भोगता रहता है। इससे बचने का क्या कोई उपाय है ? कबीर साहिब कहते हैं :—

साधो, यह मन है बड़ा ज़ालिम।
जा को मन से काम परो है तिस ही ह्वै है मालूम।

मन कारन जो उनकी छाया, तेहि छाय में अटके।
निरगुन सगुन मन की बाजो, खरे सजाने भटके।

यह मन ही है जो दु:ख और सुख उठाता है। जिस के लड़का हो जाता है वह प्रसन्न होता है लेकिन जिसके लड़का मर जाता है वह रोता है। मैं स्वयं इस मन रूपी चक्कर में रहा हूं। कभी मन के अन्दर किसी प्रकार का भला विचार आ जाना तो प्रसन्न होना और जब बुरा आना तो दु:खी होना। मैं सदैव दाता दयाल के पास यह शिकायत किया करता था कि आपने मुझे फ़कीर बना दिया, मुझ में तो ये अवगुण हैं, ये दोष हैं तो वह कहा करते थे कि जिसने फ़कीर बनाया है वह फ़कीर बनाकर छोड़ेगा। तुम में अभी तक सांसारिक इच्छाएं हैं। अत: जो व्यक्ति सांसारिक आशाए रखता हो और मन के चक्कर से निकलने की आशा करे तो यह असम्भव है। लाख तुम सुमिरन करो, ध्यान करो या शब्द अभ्यास करो लेकिन जब तक सांसारिक चाह व इच्छा विद्यमान है संसार में कोई भी व्यक्ति इस मन रूपी चक्कर से नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

निकल सकता । मैं सारा जीवन इस मन के साथ जूझ-जूझ कर मर गया, मुझे कुछ लाभ नहीं हुआ । जितने ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर हैं कोई भी ऐसा नहीं जो इस मन रूपी चक्कर में न आया हो । वह बैठते हैं तो किसका ध्यान करते हैं ? कोई राम का करता है, कोई कृष्ण का करता है, कोई देवो का करता है, कोई किसी का करता है । वह उनके मन का चक्कर है, न कोई राम वाहर से आता है, न कोई कृष्ण होता है, न कोई फ़कीर चन्द होता है बल्कि उसका अपना ही मन होता है और उसके साथ वह जूझता है जो अच्छा भी होता है तथा बुरा भी होता है । मनुष्य कर्म करता है तथा सोचता है कि मैं यह करूंगा; मैं यह बन जाऊंगा । उसका यह सोचना भी उसके मन का चक्कर है । तो उस मन रूपी चक्कर से बचने का कोई उपाय भी है ? यही एक प्रश्न है । यही कि भई ! आशा मत रखो लेकिन जब तक जीवन है आशा छोड़ना असम्भव है । कह देना दूसरी बात है । सन्त भी कहते थे कि हम आशारहित हैं । यदि आशा-रहित थे तो उन्होंने डेरे क्यों बनाये । क्या उसमें

उनकी कोई आशा व गरज नहीं थी ? इन डेरों को क़ायम रखने के लिए उन्होंने कौन-कौन सी Policy नहीं की ? उन्होंने कितना पाखण्ड जगाया ? नाम ले जाओ, अन्त समय सत्तगुरु तुमको ले जायेगा। मुझे एक व्यक्ति मिला जो कहता है कि गुरु जिसको नाम देता है यदि वह इस जन्म में पूर्ण शिष्य न हो और जब दूसरा जन्म लेगा तो वह गुरु फिर आता है तथा अवतार बन कर उसका गुरु बनता है तथा उसका बेड़ा पार कर देता है। ऐसी-ऐसी रोचक और भयानक बातें बता-बता कर हम जीवों को धर्म व पन्थ वालों ने मूर्ख बनाया हुआ है।

मैं अपनी बाबत जानता हूं। मैं भी मन से बड़ा सुखी और दु:खी होता था। जब मैं 10, 12 हज़ार रुपया लेकर के आरती करता था, आप देखो मुझे कितना आनन्द आता था। मैं घुंघरू बांध कर नाचा करता था। मुझे आनन्द आता था तथा साथ में रोया भी करता था। फिर इस मन से बचने का कोई उचित उपाय भी है ? कबीर साहिब कहते हैं :—

मन कारन जो उनकी छाया, तेहि छाया में अटके।

अर्थात् मन के अन्दर जो ख्याल व तरह-तरह के रूप व विचार या शक्लें पैदा होती हैं हम सब उनको सत्य समझ कर उनके पीछे दौड़ते हैं तथा उनके बीच अटक जाते हैं। मैं इस मन से कैसे छूटा ? मैं इस मन रूपी चक्कर से कैसे निकला ? केवल इस विश्वास के होने से कि मेरे मन के अन्दर से जो कुछ निकलता है वह मेरे मन की छाया और माया है । अत: मैं उनको सत्य नहीं मानता और उनके पीछे नहीं दौड़ता। न अब मैं उन में अटकता और बहकता हूं। जो सत्य भी हो सकता है तथा गलत भी हो सकता है। आप को एक उदाहरण बताता हूं। एक लड़की व्यास की सत्संगिन है जिसने बाबा सावन सिंह जी से नाम लिया हुआ है। बाबा जी ने उससे कहा—तुम शादी करवा लो। उसने कहा—मैंने तो परमार्थ लेना है, मैंने शादी नहीं करवानी । उसने शादी नहीं करवाई। फिर बाबा जगतसिंह जी ने भी उसे शादी करवाने को कहा। उसने कहा—मैंने नहीं करवानी। फिर वह मेरे सत्संग में भी आने लगी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

उसकी आयु 40 वर्ष की हो गई। आखिर औरत थी शादी करना चाहती थी। एक दिन मेरे पास आकर कहने लगी—बाबा जी ! मैं एक दिन अभ्यास करने बैठी, तो बाबा सावन सिंह जी आ गये। वह कहने लगे— काको ! मैं तुम्हारे लिए पति कहाँ से ढूंढूँ। आगे सौकन (सौत) खड़ी है। इतने में बाबा जगत सिंह जी आ गये। उन्होंने भी कहा—काको ! तुम्हारे लिए पति कहां-कहां से खोजूं। इतने में मैं फ़कीर चन्द भी चला गया तो बाबा सावन सिंह जी ने कहा—अच्छा ! तेरी शादी बाबा फ़कीर चन्द जी से कर देते हैं। बाबा सावनसिंह जी ने आपके सिर पर सेहरा बांध कर ग्रन्थ साहिब के आगे पीछे फेरे दिला दिये। मेरी बात को सोचो। यदि मैं गया होता तो मान लेता। वह क्या था ? वह बाबा सावनसिंह, बाबा जगतसिंह और फ़कीर चन्द कौन था ? वह उसका अपना ही मन था। उसके अपने मन की छाया थी। बाबा जी ने क्यों कहा कि आगे सौकन (सौत) खड़ी है। क्योंकि वह एक मैजिस्ट्रेट से शादी कराना चाहती थी मगर मैजिस्ट्रेट की पहली पत्नी थी। उसको

पहली पत्नी से तलाक नहीं मि
अन्दर जो कुछ प्रकट हुआ वह क्या था :
कोई बाहर का आया ? उसका अपना ही मन था
और हम धर्म व पन्थ के जितने भी व्यक्ति हैं सब
अपने मन के चक्कर में हैं।

इसी प्रकार 1941 ई० में मैंने अपने मकान का गृहप्रवेश किया। यू० पी० का एक व्यक्ति बिहारी-लाल नंगे पांव एक दरी, तीन सौ रुपया और मिठाई लेकर मेरे पास पहुंचा। मैंने कहा—तू कौन है ? महाराज ! मेरी पत्नी अभ्यास करती है उसने स्वप्न में देखा कि महर्षि जी व बाबा सावन सिंह व स्वामी जी तथा हजूर महाराज जी आये। उन्होंने कहा—भई ! वक्त का गुरु फ़कीर चन्द है। तुम उसके पास चले जाओ तथा उस समय आप भी आ गये अर्थात् मैं भी चला गया। मेरे पास बैंक में कुल 305रु. थे। यह 300 रु. मैं लाया हूं तथा यह दरी आपकी भेंट करता हूं। हमें आप अपना शिष्य बना लें। यदि वह मेरा नाम न लेता कि मैं भी गया तो मैं मान जाता कि बाबा सावन सिंह या

महर्षि जी या हजूर महाराज जी आये। जब उसने मेरा नाम लिया कि मैं गया तो मुझे ज्ञान हो गया। ज्ञान तो पहले भी था अब वह ज्ञान पक्का हो गया। यह क्या योगी, क्या ऋषि, क्या मुनि सब इस मन के चक्कर में आये हुए हैं और इसीलिए राधास्वामी दयाल ने सभी को काल और माया के अन्दर रखा है तथा यही कबीर साहिब कहते हैं कि यह सारा चक्कर इस मन का है और कुछ नहीं :—

मन काल जो उनकी छाया, तेहि छाया में अटके।
निरगुन सगुन मन की बाजी, खड़े सयाने भटके।

अब देखो, एक व्यक्ति मालिक का कोई सगुण स्वरूप मानकर उसे पूजता है, दूसरा उसको ख्याली तौर पर निराकार समझ कर पूजता है वह भी मन ही है। ये सभी भटके हुए हैं। तथा आज इसका विश्वास होने के कारण मैं सच्चाई के आगे झुकने के लिए विवश हूं तथा मान गया कि जो कुछ स्वामी जी, कबीर साहिब या योगवासिष्ठ ने कहा है, यह सत्य है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्त गुन कीन्हे।
तीन लोक जीवन वश कीन्हे, परे न काहू चीन्हे।

कबीर साहिब ने तो चौदह लोक कह दिया। लेकिन मैं क्या समझता हूं ? पांच कर्मेन्द्रियां पांच ज्ञानेन्द्रियां और चार मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार, मैं चौदह लोक यह समझता हूं। जब तक हम इन में हैं हम चौदह लोक में हैं और सम्पुर्ण संसार इसी चक्कर में आया हुआ है। यदि चौदह लोक कोई और हैं तो दूसरे सन्त मुझे बता दें। मैं इनसे कैसे निकला ? केवल यह विश्वास होने से कि जो कुछ मेरे मन में प्रकट होता है, जितने रूप, विचार व ख्याल बनते हैं चाहे वह रूप, दाता दयाल का है, चाहे राम का है, चाहे कुछ भी है, यह सारे का सारा मेरे मन की माया और छाया है। अब मेरे अन्दर जितने ख्यालात उठते हैं, मैं उनको देखता हूं मगर मैं इनमें फंसता नहीं क्योंकि मैं जानता हूं कि यह केवल Imagination and Illusion है अर्थात् भासता हैं, है कुछ नहीं। यह मेरे वचनों का भेद है:—

जो कोऊ कहै हम मन को मारा, जाके रूप न रेखा।

रूप-रेखा कोई है ? तुम अकेले बैठो फिर देखो, तुम्हारे अन्दर विचार कहां से उठता; फुरता है, ध्यान करो। आपको मन के रूप का पता चल जायेगा। यह मन क्या है ? जिस प्रकार के Suggestions and Impressions ख्यालात पढ़कर; सुनकर, देखकर हमारे अन्दर संस्कार होते हैं उनके सहस्रदलकमल के स्थान पर Film बन जाती हैं, उनके पीछे ज्योति-स्वरूप आत्मा है। जब हम इस स्थान पर बैठते हैं तो क्या होता है ? जिस प्रकार सिनेमा के अन्दर छोटी-छोटी तस्वीरें होती हैं, पीछे Lamp होता है तो वह अक्स अर्थात् शक्लें बनाता है । इस प्रकार वह नक्शे जो हमारे मस्तिष्क के अन्दर पड़े हुए हैं, जब आंख बन्द कर लेते हैं तो प्रकाश रूपी आत्मा उन Films को जिस प्रकार से सिनेमा में खेल होता है उस प्रकार हमारे अन्दर वह खेल होता है। तो जब तक कोई व्यक्ति अपने आप को सहस्रदलकमल के स्थान से ऊपर नहीं ले जायेगा वे जो Films बनी हुई हैं; वे चलेंगी। परम सन्त हो, महर्षि हो,

गृहस्थी हो सब की चलेंगी। उससे कोई बच नहीं सकता क्योंकि वे Films तो बनी हुई हैं। यदि मानव यहां बैठे और वह कहे कि उसको Films दिखाई न दें तो यह असम्भव है। तुम मेरे सामने बैठे हो, मैं कहूं तुम नहीं हो, यह कैसे हो सकता है। मैं तुमको देखने के लिए विवश हूं। जब हमारे प्रकाश रूपी आत्मा के सामने Fiims आती हैं तो जो कुछ भी अच्छा या बुरा हमने किया हुआ है वे विचार शक्लें बना कर हमारे सामने आयेंगे, कोई रोक नहीं सकता। अच्छी Films भी होंगी तथा बुरी Films भी होंगी। अतः सन्तों नें साधारण जनता को यह कहा है कि अच्छी Films बनाओ, अच्छे ख्याल व विचार रखो, प्रेम करो, श्रद्धा रखो, परोपकार करो ताकि तुम्हारी Film अच्छी बन जाये। जितना यह प्रवृत्तिमार्ग है; यह क्या है? अपने विचार को अच्छा बनाओ ताकि तुम्हारी Film अच्छी रहे। और यदि स्वप्न भी देखो तो अच्छा स्वप्न। राम, कृष्ण या गुरु का अच्छा स्वप्न देखो और तुम उसे देख कर खुश होओ। यदि तुम इन Films

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

से निकलना चाहते हो तो Films के Centre के स्थान से तुमको अपना ध्यान ऊपर ले जाना पड़ेगा। वरना तुम लाख प्रयत्न करो कि तुम्हारे अन्दर तुम्हारा मन नाना प्रकार की शक्लें न बनाये, यह न करे, वह करे, यह असम्भव है :—

छिन छिन में कितनौं रंग ल्यावै जे सपनेहूं नहिं देखा।
रसातल इकइस ब्रह्मांड, सब पर अदल चलावै।

क्यों न चलायेगा। मैंने चौदह लोक बना दिये। जो इससे अर्थात् दूसरे शब्दों में दसवें द्वार से आगे जायेगा तब वह मन से निकल कर वास्तविकता को पायेगा।

षट् रस में भोगी मन राजा सो कैसे कै पावै।

वह कहते हैं कि जो मन है वह रूप, Films बनाता है उसको वश में कैसे किया जाये। मन सब पर राज्य करता है। कोई भी इस Film से नहीं बचा। किसी की Film वेदान्त की, किसी की सूफीमत की, किसी की भक्तिमार्ग व ज्ञान-मार्ग की, किसी की काम या क्रोध की, अतः इससे कैसे बचें।

सबके ऊपर नाम निहच्छर तहँ लै मन को राखै।

वहां ले जाये। नेह अक्षर जो नाम है वहां ले जाये। एक क्षर है, एक अक्षर है तथा एक नेह अक्षर है। स्थूल, मादा, माया, कर्मेन्द्रियों का खेल क्षर है। ज्ञानेन्द्रियों अर्थात् सूक्ष्म प्रकृति का खेल अक्षर है। इससे आगे कारण प्रकृति है। प्रकाश और शब्द नेह अक्षर है। तो जब तक कोई व्यक्ति अपने मन या अपनी सुरत को प्रकाश और शब्द में नहीं ले जायेगा उसका मन किसी न किसी शक्ल में हमेशा ही उसको चक्कर में रखेगा। चाहे वह अच्छे चक्कर में रखे, चाहे वह बुरे चक्कर में रखे। जब तक जीवन है Films तो बनेंगी तुम आंख, कान बन्द नहीं कर सकते तथा मेल-मिलाप के बिना नहीं रह सकते। फिर इसका उपाय क्या है ? या तो अपने विचार से Films को काटो यह ज्ञान पन्थ है। मगर ज्ञान पन्थ कठिन है :—

ज्ञान का पंथ कर्पाण की धारा, चल गेस न लागत वारा।

इसको भक्तिमार्ग दो या किसी ऐसे रूप का सहारा दो जिसको यह समझो कि वह अकाल पुरुष है, परम तत्त्व है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर : ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नम : ।।

उसको पारब्रह्म समझो । मानव समझ कर ध्यान मत करो ।

तन मन की गति जान परै यह, सन्त कवीर मुख भाखै ।

मैंने मन की वावत बहुत कुछ बता दिया । पूर्व कर्मानुसार चार दिन का जीवन है । कहां गया गो-स्वामी गोविन्द कौल, कहां गया मेरा भास्कर नाथ । इस बात को भूल जाओ कि किसी गुरु ने तुम को फूक मार देनी है । गुरु ने गुर व ढग बता देना है जिससे तुम बच सकते हो । यदि तुम निर्धन हो, एक उपाय वताये जाता हू । वोवी को कहो जब सुवह-शाम रोटी पकाती है या चावल पकाती है तो मुट्ठी भर चावल या आटा प्रतिदिन निकाल कर अलग रख ले । पन्द्रह दिन के वाद उसे कुत्तों, चींटियों को डाल दो या किसी भूखे को खिला दो । लगातार ऐसा करते रहो, दिन फिर जायेगे । याद रखो जो देता नहीं उसे कुछ नहीं मिलता । दु:खियों को सहायता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

करें । तथा उनकी शुभ भावना लिया करो। साधुओं को देने के अतिरिक्त दुःखी गृहस्थियों की सहायता करो। कश्मीर Laws बनाओ, जगह मिल गई है। एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखो।

मानव मन्दिर पढ़ने वाले सज्जनों को सूचित किया जाता है कि हजूर परम दयाल जो महाराज 23-7-81 को अमेरिका यात्रा पर पधार गये। अमेरिका में पिट्सबर्ग के स्थान पर पहुंच कर उनको पेशाब का दर्द हो गया जिससे उनको अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। पहले ग्लूकोश दिया गया फिर 12-8-81 को Scraping operation किया गया। तब से वह अस्पताल में ही हैं। आज 24-8-81 तक जो सूचना मिली है उसके अनुसार यद्यपि उनकी शारीरिक अवस्था सन्तोषजनक है किन्तु बेहोशी जारी है। उन्होंने औपरेशन होने से पूर्व दो छोटे-२ सत्संग संसार के प्राणियों के नाम पत्रों द्वारा भेजे हैं जो कि प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनको पढें और जिज्ञासु सज्जन लाभ उठायें।

प्रकाशक—
मानव मन्दिर।

परम दयाल परम सन्त फ़कीर चन्द जी महाराज के पत्र की नकल जो उन्होंने 6-8-81 को पिट्सबर्ग U.S.A. से मानवता मन्दिर होशियारपुर को लिखा।

रात के दस बजे हैं। पिट्सबर्ग के बड़े अस्पताल में एक 2015 नं० कमरे में पड़ा हूं। अपनी 95 वर्ष की सारी आयु मेरे सामने घूमती है। साधन किया, अभ्यास किया, इनसे क्या समझा? कि मैं वास्तव में एक चेतन का बुलबुला हूं। मैं चाहता था और चाहता हूं कि जब मेरा अन्तिम समय आये तो मैं कैसे शरीर व मन इत्यादि को छोड़ कर ऊपर जाऊंगा तो यह बता जाऊंगा मगर अनुभव कुछ उलटा हो रहा है। मैं चाहता हूं कि शरीर और मन से अलग हो जाऊं मगर जब शारीरिक कष्ट होता है, सिर चकराता है तो यह असम्भव हो जाता है। क्योंकि चार दिन से दिन-रात निरन्तर ग्लूकोश दिया जा रहा है, अत: अब थक गया हूं और ऐसा करना असम्भव हो गया है। अब रात के 12 बजे हैं। पेशाब के बार-२ आने और सख्त जलन होने के कारण चार दिन से कुछ खाया नहीं जाता। जो ज्ञान-ध्यान था, वो कहां गया? काश! बड़े-बड़े महात्मा

ना हाल बताते कि उनके साथ क्या-२ बीती ि
सांसारिक जोव इससे लाभ उठाते ।

खेद ! मुझे सिवाय इसके कि पांच दिन से चारपाई से बंधा हुआ हूं या पेशाब के समय जलन होती है, कोई विशेष कष्ट नहीं। मगर मालिक ! मुझे एक दुख है। मैंने जहां तक हो सका जीवन में किसी सत्संगी का नहीं खाया। केवल मूलचन्द्र रिज्जूमल कटनी वाले, दुर्गादास व मेरा लड़का रुपया भेजते हैं जिससे मेरा निर्वाह होता है। अब यहां का खर्च परमात्मा ही जाने क्या होगा। 150 डालर तो मकान का प्रतिदिन का किराया है।

डा० राव कहता है—चिन्ता मत करें वह सब सहन करेगा। और यदि मैं अमेरिका में मरा तो 2000 डालर और खर्च होगा। कर्म की Philosophy को देख-कर आखों में आंसू आ रहे हैं। तो क्या मुझे फिर दूसरे जन्म में जो यह रुपया खर्च करेंगे, देने पड़ेंगे ? मस्तिष्क सोचने योग्य नहीं।

छम-छम वरसत पानी नैनन से मेरे.
अन्जामे कर्म जब मेरे सामने आता है।
बस एक ही बात से दिल को है सहारा,
कि मालिक के चरणों में समाना आता है।

मौज, मौज, मौज, तेरी मौज। मैं सुखी हूं ! दया करो जो फिर इस काल-कराल देश में न आऊं।

परम दयाल परमसन्त फ़कीर चन्द जी महाराज का पत्र जो उन्होंने 7-8-81 को पिट्सबर्ग U.S.A. से मानवता मन्दिर के नाम लिखा :—

राधास्वामी !

ऐ मेरी आत्मा ! सत्य बता कि तूने अपनी नीयत से जो कुछ धर्म, कर्म, ईमानदारी, सेवा, भक्ति, ज्ञान इत्यादि किये हैं क्या वह इस समय तुम्हारी शारीरिक बीमारी को दूर करने में सहायक हो सकते हैं ? संसार वालो ! सुनो !! नहीं । हाँ, दाता दयाल की दया से यह ज्ञान हो गया है कि यह संसार काल व माया का है । प्रत्येक प्राणी साधु, महात्मा, सन्त कोई भी अवतार हो, सबको अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है । कोई भी प्राणी जब तक शरीर मन में है वह इन संस्कारों, कर्मों (जो उसने अपने प्रारब्ध कर्म या इस जन्म के कर्म किये हुये हैं) से बच नहीं सकता । अगर

उसे यह ज्ञान है कि सब सूक्ष्म प्रकृति है या माया है तो प्रभाव कम होगा मगर मुझे जब शारीरिक कष्ट होता है तो डाक्टर टीका लगाता है तो चाहे यह लाख ज्ञान हो कि यह माया है कुछ भी लाभ नहीं होता। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा जिनके रूप में मैंने उस परम तत्व को माना, कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना, इसलिए कहता हू किन्तु दावा नहीं करता कि इस संसार का पैदा करने वाला जालिम है। बृक्षों के पत्तों को कीड़े खाते हैं। एक कीड़ा दूसरे कीड़े को खाता है। बशर्ते कि प्रत्येक स्थान पर क्या होता है। यह सोचो।

हम मानव, हकूमत में आकर, मुल्की हिरस में आकर हजारहां जानें लड़ाई में मरवा देते हैं। इन्सान स्वयं काम वासना के लिए सन्तान पैदा कर लेता है। यह नहीं सोचता कि इस बच्चे को क्या-क्या दुःख व कष्ट आयेंगे। यह संसार ऐसा ही है।

फिर कौन सी शिक्षा बदलूं। ऐ इन्सान ! इस संसार से निकल जाने का प्रबन्ध करो और अपनी नीयत को साफ रख कर अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ हेरा-फेरी, धोखा व फरेब मत करो।

हमारे अध्यक्ष श्री भारद्वाज जी ने अपने भाषण में दयाल व काल की आवाज़ का ज़िक्र किया, मैं अपनी आत्मा से पूछता हुं कि तूने दयाल व काल की आवाज को क्या समझा ?

अभ्यास में दो बातें आती हैं—एक Meditation और एक Concentration मेडिटेशन में हमारे मन में Sub concious mind में जो कुछ छिपा होता है उसका विकास होता है—जो आदमी किसी ज़ाती गरज को लेकर Meditation करता है—तो मेडिटेशन में जो विचार उठता है वो काल की आवाज़ है । जो बिना किसी गरज के अपनी ज़ात में गुम होने को Concentration के बाद जो विचार पैदा होता है, वो दयाल की आवाज है—महात्मा गांधी कहा करता

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

था, मेरे अन्दर आवाज आती है। कई लोग कहते हमें इलहाम होता है। वो जो आवाज होती है वो आवाज कई बार ठीक व कई बार गलत भी होती है। महात्मा गांधी ने कहा था पुलिस मिलिट्री की आवश्यकता नहीं है वो, काल की आवाज थी—ऐसे ही कई लोग इलहाम कर देते हैं कि उन्हें इलहाम हुआ—ऐसी आवाज का एतबार नहीं होता—जो आदमी निःस्वार्थ, निष्काम हो कर अपने आपको अपनी ज़ात में विसमाध अवस्था को प्राप्त करता है, जो आवाज पाता है वो दयाल की आवाज है। मैंने 15 अगस्त 47 को संसार की दशा देखते हुए निष्काम, निःस्वार्थ रहते हुए विसमाध अवस्था, में जाकर उत्थान के बाद मेरे अन्तर से आवाज आई कि वर्तमान दशा में कोई उपाय शान्ति का अगर हो सकता है तो वह केवल इन्सान बनने में है :—

जय गुरु देवा जी ने अपनी समाधि से उठने के पश्चात् कहा था कि मैं सुभाषचन्द्र बोस को लेकर आऊंगा—क्यों उसने कहा—वो उसके मन रूपी काल की आवाज

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

थी और वो ग़लत निकली। ऐसे ही महात्म गांधी की आवाज मान लेते तो पाकिस्तान या चीन के हमले में क्या होता ? प्रत्येक मनुष्य यह नहीं समझ सकता है कि जो उसके अन्दर आवाज आती है वो दयाल की है या काल की है, यह केवल वह महापुरुष ही समझ सकता है जो मानसिक, आत्मिक, शारीरिक बोध-भान से अपने को अलग कर सकता है जिस तरह दाता दयाल ने १९३३ में सुनाम शहर के सत्संग में जहां कोई चार-पांच हजार आदमी आये थे—वहा आरती के बाद वे ३५ मिनिट हुक्का पीते रहे, धूआं छोड़ते रहे तब सारा सत्संग मुझसे कराया व कहा—फ़कीर चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना—जब यह उन्होंने कहा था तब न राधास्वामी मत, न सन्तमत का पक्ष किया था—यह नहीं कहा कि राधास्वामी मत का प्रचार करना—उनकी तब की आवाज दयाल की आवाज थी।

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
20-9-81 को होगा।

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! कुछ कहना चाहता हूं। मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तलाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम किया। प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं। मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया हैं यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। मेरी अपनी कुरीद अर्थात् हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिए मैं अपने लिए इस अनुभव को सत्य मानता हूं।

अब मैं बूढ़ा हो गया। मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि इस फंसाव में मैंने निज स्वार्थ अर्थात् धन, मान,

प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं, शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर है। खर्चे बहुत बढ़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर का दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्त्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिए रुपया जो कोई खुशी से देता, ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिए लाभदायक है, तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है, डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है, जो चाहें मुफ्त मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना

जीवन क्रियात्मक बनायें । पुस्तकें या सत्संग केवल मन के भ्रम, शंकाएं दूर कर सकते हैं । यदि अमल शान्ति नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, अमली शान्ति नहीं मिलेगी । अधिक क्या लिखूं चले-चलाओ का समय है, मैंने वसीयत (Will) कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरिका में हैं) और मुन्शीराम भगत, मानवता और आध्यात्मिकता का प्रचार करेंगे । मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के आधीन है । ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें, केवल प्रकाशन का काम जारी रखें । अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का (Statue) धरती में गाढ़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें ।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1 अनुभवसार।

—o◡o—

गतांक से आगे]

सहायता करें, क्योंकि परम सत्ता के साथ एक हो जाने के कारण, उनके दिल से दया की धारा निरन्तर बहती रहती है, इसका मतलब यह नहीं कि उनको दूसरों से लगाव हो जाता है। उनकी लोगों की सहायता करने की प्रबल इच्छा उनके मन से अपने आप ही उमड़ती है । यह बताने के लिए कि सन्तों से दया की भावना और प्रेम किस प्रकार अपने आप उमड़ता, है फ़कीर बाबा अनेकों उदाहरण देते हैं। जब लोग फकीर बाबा की उपस्थिति के कारण, उनके आशीर्वाद के कारण तथा उनके रूप के प्रकट होने के कारण रोग आदि से मुक्त हो कर लाभ उठाते हैं. फ़कीर बाबा इसका कोई श्रेय नहीं लेते। वे तो सदा यही कहते हैं कि उन्हें तो अपने रूप प्रकट होने का ज्ञान हो नहीं होता किन्तु फिर भी वह लोगों को अपने आशीर्वाद से लाभ उठाने से रोकते नहीं। इतना ही नहीं जैसा कि हम आगे, चल कर देखेंगे, फ़कीर बाबा लोगों को इस बात का प्रोत्साहन देते हैं कि वे उचित रूप से अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए सदा आशावादी बने रहें।

जब फकीर बाबा यह कहते हैं कि उनको अपने रूप के प्रकट होने का कोई ज्ञान नहीं होता और साथ ही साथ यह भी कहते हैं कि ऐसे अनुभव लोगों के मन का भुलावा होते हैं तो ऐसा कहने से उनका अभिप्राय यह नहीं होता कि ये घटनाएं सच्ची नहीं हैं। वह तो लोगों को यह बताना चाहते हैं। कि इन घटनाओं के चक्कर में इस बात को नहीं भूल जाना चाहिए कि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य मन की सिद्धियों से परे है। यदि चमत्कार बिलकुल झूठी और निरर्थक घटनाएं होतीं, तो उन्हें कभी घटित ही नहीं होना चाहिए था। आम लोगों के लिए उनके जीवन की घटनाओं की समस्याओं का हल होना, रोगों से मुक्त होना, परीक्षाओं में सफल होना और माली हालत का सुधारना आदि ऐसी घटनाएं हैं, जो बहुत महत्त्व रखती हैं। यदि ये समस्याएं हल न हों और मनुष्य का मन इनके कारण दुःखी रहे तो वह कभी भी मन के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता। वह साधना नहीं कर सकता और उस शब्द और प्रकाश का अनुभव नहीं कर सकता, जिसके बिना मन के स्तर से ऊपर उठना असम्भव

है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए मन की शान्ति बहुत ज़रूरी है। इसी कारण फ़कीर बाबा दुःखी लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए और उनकी चिन्ताओं को दूर करने के लिए उनके विश्वास को बढ़ावा देते हैं, जिसके कारण उनके काम बन जाते हैं। जब फकीर बाबा की आज्ञा पर चलने के कारण किसी के मन की इच्छा पूरी हो जाती है, तो उस व्यक्ति के मन को सन्तोष मिल जाता है। यह तो ठीक है कि सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हमारा जीवन का परम लक्ष्य नहीं है किन्तु यह भी सत्य है कि ऐसी पूर्ति के बिना मन को शान्ति नहीं मिल सकती। दूसरे शब्दों में, सिद्धियों से परे की अवस्था, सिद्धियों से गुज़रने के बिना नहीं पाई जा सकती। मन से परे की अवस्था, मन को अशान्ति से मुक्त करने के बिना नहीं मिल सकती। मन की अशान्ति, उसके कारण को दूर किये बिना नहीं हट सकती। क्योंकि आम तौर पर मन की अशान्ति का कारण कोई न कोई इच्छा ही होती है। इसलिए उसकी पूर्ति करने से ही उस अशान्ति को दूर किया जा सकता है। सन्त गति प्राप्त होने के पश्चात् तो इच्छाए

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रहती ही नहीं। फ़कीर बाबा उस परम सन्त की अवस्था पर पहुंच चुके हैं और सिद्धियों की अवस्था से ऊपर उठ चुके हैं, परन्तु इस अवस्था पर पहुचने से पहले, उन्होंने न ही केवल युवावस्था में इन चमत्कारों का अनुभव किया था, अपितु दाता दयाल से दीक्षा लेने से पहले और बाद में भी चमत्कारों को घटित भी किया था।

उनकी असंख्य चमत्कारी घटनाओं में से कुछ का वर्णन इस अध्याय में देना ठीक होगा। जब शुरू-शुरू में इन चमत्कारी घटनाओं का उन्होंने अनुभव किया, उस समय तो वह यह समझते थे कि ये घटनाएं किसी बाहरी कारण से घटित हो रही है और वास्तविक हैं। किन्तु अब वह ऐसी घटनाओं को भुलावा इसलिए कहते हैं, क्योंकि अब उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि ये घटनाएं किसी बाहरी शक्ति के कारण घटित नहीं होती। ये केवल हमारे मन अथवा विश्वव्यापी मन अथवा उस काल का खेल हैं, जो ईश्वर का सच्चा रूप नहीं है। हमारा आत्मा का सच्चा रूप हमारे मन से उसी प्रकार परे है,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जैसे ईश्वर का सच्चा रूप काल से परे है। हमारी आत्मा का असली रूप सुरत, वह तत्त्व है, जो उस आत्मा से परे है जिसे कारण शरीर कहा जाता है। इसी प्रकार सच्चा ईश्वर अथवा सत् पुरुष उस प्रकाश से परे है, जो विश्व का सर्वव्यापी कारण है।

जब फ़कीर बाबा मन के स्तर से ऊपर नहीं उठे थे और जब वह भगवान् राम और भगवान् कृष्ण के रूपों को ईश्वर का अन्तिम रूप मानते थे, उस समय उन्हें अनेकों चमत्कारों के अनुभव होते थे। उनकी भगवान् राम तथा कृष्ण के साक्षात् दर्शन करने की प्रबल इच्छा थी; उन्हें उनके न ही दर्शन हुए अपितु बातचीत भी हुई। उनमें से एक घटना ऐसी घटी, जिसने उन्हें सच्चे ईश्वर की खोज में लग जाने को प्रेरित किया। पिछले अध्याय में यह बताया जा चुका है कि फ़कीर बाबा को दो चमत्कारी अनुभव हुए। एक में तो उन्होंने उस साधु से भेंट की थी जिन्होंने उन्हें बताया कि ईश्वर ने उनके लिए मनुष्य का रूप धारण कर लिया है और दूसरे में उन्होंने दाता दयाल जी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

महाराज के दर्शन किये थे। क्योंकि इन दोनों चमत्कारी अनुभवों ने उन्हें अन्त में सच्चे ईश्वर का अनुभव कराया और उन्हें सत्तगुरु वक्त या युग-पुरुष बना दिया। इसलिए इन घटनाओं को असत्य नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार फ़कीर बाबा की भगवान् कृष्ण से वह भेंट, जिसका नीचे उल्लेख किया जा रहा है झूठी नहीं कही जा सकती। यदि फ़कीर बाबा को यह अनुभव नहीं होता तो वह चमत्कारों से कभी ऊपर न उठ सकते। दूसरे शब्दों में, फ़कीर बाबा के जीवन में घटित चमत्कार उनके जीवनरूपी ज़ंजीर की वे कड़ियां हैं, जो उसे जीवन्मुक्त अवस्था से जोड़ती हैं।

उनके युवावस्था की भक्ति के दिनों में उन्हें एक बार उस रेलवे स्टेशन के निकट खुले मैदान में भगवान् कृष्ण के दर्शन हुए जहां पर वह स्टेशन मास्टर का काम करते थे। भगवान् कृष्ण उनके आगे-आगे चल रहे थे, फ़कीर बाबा उनके पीछे चलते-चलते बातें कर रहे थे। जब वह कुछ दूरी तक चले, तो भगवान् कृष्ण ने फ़कीर बाबा को

पृथ्वी पर पड़े हुए गोबर को खा लेने को कहा। फ़कीर बाबा ने शीघ्र ही उनकी आज्ञा का पालन किया, पर बाद में सोच में पड़ गये। उन्होंने बहुत से ऐसे भक्तों के जीवन चरित्र पढ़े थे, जिन्हें ईश्वर का साक्षात्कार हुआ था। उन्होंने कहीं भी ऐसी घटना के विषय में नहीं पढ़ा था जहां भगवान् ने किसी को गोबर खाने को कहा (यहां पर यह बता देना उचित होगा कि गुजरात के कृष्णभक्तों के साथ ऐसी कई घटनाएँ घट चुकी हैं, जिनमें भक्तों को भगवान् ने गोबर खाने को कहा है। क्योंकि फ़कीर बाबा ने ऐसी घटनाओं के विषय में कभी सुना नहीं था; इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस घटना के पीछे कोई रहस्य छिपा था)। इससे फ़कीर बाबा यह सोचने लगे कि क्या भगवान् कृष्ण का दर्शन सच्चे ईश्वर का दर्शन था ? इसलिए उनकी ईश्वर को मनुष्य के रूप में देखने की इच्छा और भी बढ़ गई। उनकी यह इच्छा हिन्दू धर्म के विचारों के विरुद्ध नहीं थी। तुलसीदास जी ने रामायण में लिखा है :—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

"नाना विधि राम अवतारा,
रामायण शत कोटि अपारा।"

यही बात भगवद्गीता में भी कही गई है।

यद्यपि उस समय फ़कीर बाबा ईश्वर के अनुभव की अन्तिम अवस्था तक नहीं पहुंचे हुए थे, किन्तु उनको ईश्वर को मनुष्य के रूप में देखने की चाह के पीछे एक उद्देश्य था। यह उद्देश्य उस सच्चे ईश्वर के दर्शन करने का था, जो हर युग में अवतार लेता है, जो अनन्त है और देश-काल की सीमाओं से परे है। फ़कीर बाबा भगवद्गीता के उस कथन का विरोध नहीं करते, जिसमें यह कहा गया है कि ईश्वर समय की परिस्थितियों के अनुसार अवतार लेते हैं। फ़कीर बाबा कहते हैं कि जब रावण और कंस जैसे दुष्ट व्यक्ति अत्याचार करते हैं और दुराचार बढ़ जाता है, उस समय शक्ति का प्रयोग करके, पाप को मिटाने के लिए ईश्वर अवतार लेते हैं। इसीलिए ही भगवान् राम का त्रेता युग में और भगवान् कृष्ण का द्वापर युग में अवतार हुआ।

फ़कीर बाबा यह भी बताते हैं कि सन्तों का अवतार उस समय होता है जब धार्मिक नेता आम लोगों को सच्चा ज्ञान नहीं देते और यह नहीं बताते कि सच्चा ईश्वर मानसिक स्तर से परे है। इसी कारण यह कहा जा सकता है कि ईश्वर के सच्चे रूप को बताने के लिए परम तत्त्व की धारा ने दाता दयाल जी महाराज और उनसे पहले राय सालिग राम जी महाराज और स्वामी जी महाराज की भाँति फ़कीर बाबा को, हमारे समय की आवश्यकता के अनुसार सत्य के अवतार के रूप में प्रकट किया।

एक दृष्टि से फ़कीर बाबा पहले तीन सन्त अवतारों के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनसे भी एक पग आगे बढ़े हैं (इस बात को अन्तिम अध्याय में स्पष्ट किया जायेगा) किन्तु दूसरी दृष्टि से फ़कीर बाबा का अनामी धाम से इस पृथ्वी पर जन्म लेना उस ईश्वर के उद्देश्य के साथ जुड़ा हुआ है, जिसे सभी धर्मों के अवतारों ने दोहराया है। भगवान् राम और कृष्ण के दर्शन करने के पश्चात् भी ईश्वर को मनुष्य के रूप में देखने की इच्छा फ़कीर बाबा के मन में क्यों बनी रही।

आरम्भ में फकीर बाबा की भगवान् राम और कृष्ण के प्रति दृढ़ श्रद्धा ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी अवतार का सच्चा भक्त, सत्य का चमत्कार के रूप में अनुभव करता है। इस अनुभव ने फ़कीर बाबा को यह कहने पर विवश किया है कि हिन्दू धर्म और सन्तमत में विशेष अन्तर नहीं है। सत्य तो यह है कि चमत्कार के स्तर के अनुभव के पश्चात् ही मनुष्य को सिद्धियों से ऊपर उठ जाने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य सन्त पद को तभी प्राप्त कर सकता है, जब वह किसी न किसी रूप में ईश्वर की भक्ति करे। किन्तु वह भक्ति दृढ़ होनी चाहिए। क्योंकि फ़कीर बाबा का भगवान् राम और कृष्ण में पक्का विश्वास था, इसलिए उन्होंने न ही केवल चमत्कारों का अनुभव किया, किन्तु स्वय भी चमत्कारों को घटित किया।

उनके द्वारा घटित हुए चमत्कारों में से निम्नलिखित घटना बहुत रोचक है :—

"एक बार जब फ़कीर बाबा एक छोटे से शहर में स्टेशन मास्टर थे, वह प्रति सप्ताह अपने घर पर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

रामायण का अखण्ड पाठ रखा करते थे। पाठ के समाप्त होने पर सभी सत्संगियों को हलवे का प्रसाद बाँटा जाता था। उस शहर में कुछ कट्टर आर्यसमाजी भी रहते थे। वे इस रामायण पाठ के बहुत विरोधी थे और फ़कीर बाबा के इस काम की हंसी उड़ाना चाहते थे। एक बार जब पाठ हो रहा था तो उन आर्यसमाजियों ने फ़कीर बाबा को तंग करने का उपाय सोचा। अखण्ड पाठ के समाप्त होने से कुछ ही देर पहले शहर की मिल में काम करने वाले मजदूरों की छुट्टी हुई थी, आर्यसमाजियों ने एक सौ के लगभग मज़दूरों को फ़कीर बाबा के घर अखण्ड पाठ में शामिल होने के लिए भेज दिया। उन्हें आशा थी कि फ़कीर बाबा का थोड़ा सा प्रसाद इन सब लोगों को बांटने के लिए काफी नहीं होगा और समय की कमी के कारण और प्रसाद तैयार भी नहीं किया जा सकेगा और इस प्रकार फ़कीर बाबा की हंसी उड़ाई जायेगी। जब मिल में काम करने वाले सब मज़दूर पाठ में बैठ गये और पाठ समाप्त होने का समय निकट आया तो फ़कीर बाबा के एक सहयोगी ने घबरा कर कहा—हमारे पास तो हलवे का एक

कटोरा मात्र ही है। ये लोग सौ से भी अधिक हैं हमें तो इनके आने की आशा ही नहीं थी। इस थोड़े से प्रसाद को हम इन सब में कैसे बांट सकते हैं? फ़कीर बाबा ने प्यार और शान्ति से उत्तर दिया— चिन्ता मत करो। प्रसाद के कटोरे को कपड़े से ढक कर सब को उतना ही प्रसाद बांटते जाओ जितना हमेशा देते हो, कंजूसी मत करो, मालिक की मर्ज़ी से सब ठीक हो जायेगा। उस सहयोगी ने वैसा ही किया। जब सब लोग प्रसाद ले चुके और कटोरे के ऊपर से कपड़ा हटाया गया तो यह देख कर सब चकित हो गये कि कटोरा ज्यों का त्यों हलवे से भरा हुआ था। इस घटना से वे कट्टर आर्यसमाजी दंग रह गये और उन्होंने फ़कीर बाबा का विरोध करना छोड़ दिया।"

ठीक इससे मिलती-जुलती घटना मेरी छोटी बहिन श्रीमती कृष्णा सारावगी के घर पर बम्बई में घटित हुई। एक बार जब फ़कीर बाबा कृष्णा के घर सत्संग दे रहे थे; तो कृष्णा ने पचास सत्संगिओं को खाने के लिए बुलाया हुआ था। क्योंकि फ़कीर बाबा के

बम्बई में आने और कृष्णा के घर ठहरने का समाचार बहुत लोगों को मिल चुका था इसलिए उनके बहुत से सत्संगी विना बुलाये ही कृष्णा के घर उनके सत्संग को सुनाने के लिए पहुंच गये । कृष्णा का कहना है कि जब खाने का समय आया तो वहां पचास के स्थान पर एक सौ पचास सत्संगी थे। पहले तो वह घबरा गई कि इन सब को खाना कैसे खिलाया जायेगा । उसे फ़कीर बाबा पर अगाध विश्वास रहा है, इसलिए उसने मन ही मन में फ़कीर बाबा से प्रार्थना की कि वह उसकी लाज बचायें और अपने रसोइए को कहा कि खाना देना शुरू कर दो। जब सभी लोगों को खाना दे दिया गया तो कृष्णा को स्वयं भी इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तरका-रियों और पूरी के सभी बर्तन इतने सत्संगियों को खाना बांट देने के बाद भी ज्यों के त्यों भरे हुए थे। कृष्णा ने इस चमत्कारी घटना के विषय में मुझे स्वयं ही बताया था ।

ये दोनों घटनाएं ईसाईयों की बाईबल के न्यूटें-स्टामेण्ट में लिखी हुई उस घटना से मिलती-जुलती हैं

जिसे ईसा मसीह से सम्बन्धित किया जाता है। कहा जाता है कि ईसा मसीह ने एक बार हजारों लोगों को थोड़े से भोजन को ढक कर बंटवाया था और वह कम नहीं हुआ था। ऐसी चमत्कारी घटनाओं का लगभग सभी धर्मों में उल्लेख है। इन घटनाओं से यह प्रमाणित होता है कि अगाध विश्वास के कारण व्यक्ति का मन ही ऐसे तथाकथित चमत्कारों को घटित कर सकता है।

आम तौर पर जब कोई भक्त अपने धर्म में विश्वास रखने के कारण चमत्कारों का अनुभव करता है तो वह कट्टर हो जाता है, इस कट्टरता में दो कमियां रह जाती हैं। पहली कमी यह होती है कि कट्टर व्यक्ति की आत्मिक उन्नति समाप्त हो जाती है। वह तंग दिल होने के कारण ईश्वर के केवल एक विशेष रूप को ही सच्चा मान कर ईश्वर की अनन्ता को समझ नहीं सकता और उसका ज्ञान सीमित रह जाता है। दूसरी कमी यह होती है कि वह सदा इस भुलावे में रहता है कि चमत्कार का कारण उस ही विशेष रूप की शक्ति है, जो

उसके मन के अन्दर न हो कर कहीं बाहर से आती है। अन्त में इसी कट्टरता के कारण व्यक्ति का विश्वास टूट सकता है। जब तक ईश्वर अथवा गुरु का विशेष आकार विश्वास करने वाले कट्टर व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति करता रहता है तब तक तो उसका विश्वास ज्यों का त्यों बना रहता है, किन्तु जब ऐसे अचानक घटने वाले चमत्कार, अन्धविश्वास होने के कारण लगातार नहीं घटते तो उस व्यक्ति का विश्वास टूट जाता है। उसका कारण यह है कि अन्धविश्वास रखने वाला कट्टर व्यक्ति स्वार्थी होता है, वह केवल सांसारिक सुखों को पाने के लिए ही भक्ति करता है। किन्तु वह व्यक्ति जो ईश्वर प्राप्ति के लिए ही साधना करता है अपने विश्वास में दृढ़ रहता है। चमत्कारी घटनाओं का अनुभव तो उसे भी होता है, किन्तु वह उनकी सीमा को जानते हुए उनसे ऊपर उठ जाता है।

फ़कीर बाबा के सम्बन्ध में चमत्कारी अनुभवों ने उनकी आत्मिक उन्नति में सहायता इस लिए दी है कि उन्होंने सच्चे ईश्वर के अनुभव करने के

उद्देश्य को सदा सामने रखा है। उन्होंने मन की शुद्धि के लिए सदा नैतिक जीवन को अपनाया है और दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा का पालन किया है। यह सत्य है कि उन्होंने चमत्कारों से ऊपर उठ जाने की अवस्था का अनुभव बाद में किया। किन्तु युवावस्था में भी वह इस अनुभव के लिए तैयार हो रहे थे। दाता दयाल जी से दीक्षा लेने के बाद भी उन्हें मुसीबत के समय अपने गुरु के रूप के प्रकट होने के अनेकों अनुभव हुए। फ़कीर बाबा के इन निजी तथाकथित चमत्कारी अनुभवों में से दो अनुभव ऐसे हैं, जिनका यहाँ पर उल्लेख करना उचित रहेगा। एक घटना तो बग़दाद में घटित हुई और दूसरी भारत में। पहली घटना के घटित होने से उन्हें यह ज्ञान हो गया कि दाता दयाल जी महाराज के रूप का प्रकट होना फ़कीर बाबा के अपने ही मन का खेल था। इस ज्ञान के हो जाने के बाद उन्होंने सच्चे ईश्वर के अनुभ करने की कोशिश को जारी रखा। दूसरे अनुभव ने उन्हें इस बात की प्रेरणा दी कि वह जीव मुक्त की अवस्था प्राप्त करने के लिए प्रकाश और

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

शब्द से भी ऊपर उठ जाय। अब इन दोनों महत्त्वपूर्ण अनुभवों अथवा चमत्कारी घटनाओं का उल्लेख करना उचित होगा।

१९१९ में फ़कीर बाबा पहले विश्वयुद्ध के दौरान में बर्त्तानिया की फौज में रेलवे के तार विभाग में ईराक में इन्स्पैक्टर का काम कर रहे थे। उनका हैड क्वार्टर दीवानिया में था। उन्हीं दिनों बदु नामक जाति ने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह की घटना में ही फ़कीर बाबा को वह चमत्कारी अनुभव हुआ, जिससे उन्हें बाद में चल कर यह ज्ञान हुआ कि गुरु का रूप मन के अन्दर से प्रकट होता है। उन्होंने उस घटना का उल्लेख अपनी जीवनी में इस प्रकार बताया हैं।

"विद्रोहियों ने हमीदिया के रेलवे स्टेशन पर भारी हमला किया। उन्होंने स्टेशन के सभी कर्मचारियों को मौत के घाट उतार दिया और स्टेशन को आग लगा दी। मैं दीवानिया रेलवे स्टेशन पर काम करता था। वहां से फौज के एक दस्ते को फौरन हमीदिया भेजा गया और मुझे भी वह

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

स्टेशन मास्टर का काम सम्भालने के लिए भेज दिया गया। हमारे सैनिकों ने खाइयों में तारें बिछा दीं और उन्ही खाइयों में से शत्रु से लड़ाई करने लगे। लड़ाई बहुत ज़बरदस्त हुई। दोनों तरफ से बहुत से आदमी मारे गये। हमीदिया में हमारे केवल ३५ सैनिक और एक सूबेदार मेजर ही रह गये और बाकी सैनिकों को दीवानिया इसलिए भेज दिया गया कि वे वहां शत्रु का मुकावला करें।

रात के समय विद्रोहियों ने हम पर हमला किया। यद्यपि हमारे सैनिक संख्या में बहुत ही कम थे, फिर भी उन्होंने डट कर मुकाबला किया। हमारे सैनिकों में से केवल एक ही घायल हुआ, जब कि शत्रुओं की भारी हानि हुई, क्योंकि वे तो हमला कर रहे थे और हम खाइयों में छिप कर अपने बचाव के लिए लड़ रहे थे। जब कुछ समय के लिए गोलियां चलनी बन्द हो गईं तो सूबेदार मेजर ने मुझे आ कर यह कहा कि मैं दीवानिया के हैडक्वार्टर पर यह सूचना दे दूं कि 'हमारा बारूद' गोलियां आदि समाप्त होने वाला है और यदि हमें और सैनिक और यद्ध का सामान शीघ्र ही नहीं पहुंचा, तो हम

एक घण्टे से अधिक लड़ाई नहीं कर सकेंगे । यह सहायता प्रात: से पहले-पहले पहुंचनी चाहिए नहीं तो हम में से कोई भी जीवित नहीं रहेगा !

मैंने तार के द्वारा यह सन्देश हैडक्वार्टर भेज दिया । स्थिति बहुत ही गम्भीर थी और हम सभी अनुभव कर रहें थे कि हमारा अन्त आने वाला है । मुझे भी मौत के डर से एक धक्का लगा । इसी डर की स्थिति में जाग्रत अवस्था में ही हजूर दाता दयाल जी मेरे सामने प्रकट हुए और कहने लगे, 'शत्रु आयेंगे ज़रूर, पर वे हमला नहीं करेंगे, वे अपने साथियों की लाशों को उठाने आयेंगे । उन्हें वे लाशें ले जाने दो। तुम अपने बारूद को उस समय तक नष्ट नहीं करो जब तक कि वे खाइयों के बिलकुल पास नहीं आ जाय ।'

मैंने सूबेदार मेजर को बुलवाया और अपने गुरु के प्रकट होने तथा उनके आदेश की सारी बात उन्हें सुना दी । सूबेदार मेजर ने दाता दयाल जी के आदेश को पूरी तरह से माना । शत्रुओं के सैनिक आये और हमारे ऊपर हमला किये बिना अपने साथियों की लाशों को ले कर चले गये । दूसरे दिन प्रात: छ: बजे

हमारे हवाई जहाजों ने ऊपर से आवश्यक बारूद और लड़ाई की सामग्री फैंकी । हमारा डर दूर हो गया, हमें साहस मिला और हम सुरक्षित हो गये ।"

इस घटना के तीन महीने बाद जब युद्ध बन्द हो गया तो फ़कीर बाबा वापिस बग़दाद गए, जहां पर उन्हें दूसरे सत्संगियों ने यह बताया कि युद्ध क्षेत्र में फ़कीर बाबा के रूप ने कैसे उन्हें मौत के मुंह से निकाला था। जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि इस अनुभव से फ़कीर बाबा, को यह ज्ञान हो गया कि जो व्यक्ति ईश्वर का जिस रूप में ध्यान करता है, वही रूप ही उस भक्त की सहायता करता है ।

हालांकि इस तथाकथित चमत्कारी अनुभव के बाद भी फ़कीर बाबा दाता दयाल जी महाराज की तन, मन, धन से सेवा करते रहे, किन्तु उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो गया था कि गुरु का रूप चेले के भाव के अनुसार ही प्रकट होता है। फिर भी अभी उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान नहीं हुआ

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

था कि फ़कीर बाबा स्वयं ही दाता दयाल जी का ही रूप हैं।

यह ज्ञान और उस सच्चे ईश्वर का ज्ञान, जो काल और माया से परे है, उन्हें पूरी तरह से उस समय प्राप्त हुआ जब हर प्रकार के चमत्कारी अनुभवों से उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि दुःखी लोगों की सहायता करने वाला फ़कीर बाबा का रूप सत्संगियों के मन का ही विश्वास है। दाता दयाल जी महाराज ने तो उन्हें १९२१ में ही उनकी अनेक कविताओं के द्वारा यह बता दिया था कि फ़कीर स्वयं ही सत् पुरुष हैं। किन्तु फ़कीर बाबा को यह ज्ञान काफी समय के बाद ही आया इसी सम्बन्ध में फ़कीर बाबा लिखते हैं कि १९२१ में जब वह बग़दाद से वापिस आने के बाद दाता दयाल जी के पास ठहरे, तो उन्होंने दाता दयाल जी की तन, मन और धन से बहुत सेवा की किन्तु फिर भी असली भेद को नहीं समझ सके। फ़कीर बाबा के के शब्दों में :—

"प्रेम और भक्ति में चूर मैं अपने आध्यात्मिक गुरु की साक्षात पूजा करने क लिए पहले की भांति राधास्वामी धाम पहुचा। मैंने उनके चरणों में एक सिंहासन, जरी के कपड़े, चान्दी के वर्तन और चान्दी का हुक्का (जिन पर मैंने हज़ारों रुपये खर्च किये थे) भेंट किये। मैंने बहुत ही प्रेम और मस्ती से परम श्रद्धा के भाव में दाता दयाल जी की पूजा की। मैं उनके पास लगभग ४५ दिन तक रहा। उन्हीं दिनों के दौरान में दाता दयाल जी महाराज ने मेरे अज्ञान को दूर करने के लिए मुझे ही सम्बोधित करके बहुत सी कविताएँ लिखीं। परन्तु उस समय मैं उन कविताओं के गूढ़ रहस्य को समझ नहीं सका। आज मैं उनके रहस्य को समझ गया हूं और अब अनुभव करता हूं कि उस समय मैं अज्ञानी था।"

यही कारण है कि दाता दयाल जी महाराज ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि फ़कीर बाबा को समय आने पर उनके अपने ही सत्संगियों द्वारा पूरा ज्ञान प्राप्त होगा। दूसरे शब्दों में सिद्धियों

से परे की अवस्था को पाने के लिए यह आवश्यक था कि फ़कीर बाबा सिद्धियों के अनुभव से गुजरें। इसी सम्बन्ध में उस चमत्कारी घटना का यहां कथन करना ठीक रहेगा, जो फ़कीर बाबा के साथ उस समय घटित हुई जब वह पंजाब में स्टेशन मास्टर थे। यह उस समय की बात है जब वह एक ऐसे जंक्शन स्टेशन पर काम करते थे, जहां तीन लाईनों से तीन प्लेटफ़ार्मों पर गाड़ियाँ आती थीं। ऐसे स्टेशनों पर नियुक्त स्टेशन मास्टर को सदा बहुत सतर्क रहना पड़ता हैं। गाड़ियों को लाईन क्लीयर देने में ज़रा सी भी भूल से भारी दुर्घटना हो सकती हैं। एक दिन जब फ़कीर बाबा उसी स्टेशन पर काम कर रहे थे एक भारी तूफ़ान आया और सभी रेलवे के सिगनल टूट गये। तीनों लाईनों पर आने वाली गाड़ियों का समयआ गया। आंधी तूफ़ान और बर्फ के कारण कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। फ़कीर बाबा स्टेशन पर खड़े इस चिन्ता में दुःखी थे कि गाड़ियों को सिगनल से परे कैसे सूचना भेजी जाय। ऐसे अवसर पर इञ्जन ड्राईवर सिगनल डाऊन न होने पर, तभी गाड़ी को प्लेटफ़ार्म पर ला सकता हैं,

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जब उसे स्टेशन मास्टर का लिखा हुआ मीमो मिल जाय। उस आँधी और तूफ़ान की हालत में किसी भी कर्मचारी को मीमो दे कर सिगनल के पार तक भेजना सम्भव नहीं था। इसी चिन्ता में बहुत दु:खी हो कर फ़कीर बाबा आंखें बन्द करके गुरु का ध्यान करते हुए चुप चाप बैठ गये। लगभग १५ मिनट के बाद जब उन्होंने आँखें खोलीं तो क्या देखते हैं कि तीनों की तीनों रेलगाड़िया सुरक्षित अपने-अपने स्थान पर खड़ी हैं। उन्हें यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। जब उन्होंने तीनों गाड़ियों के ड्राईवरों के पास पहुंच कर यह पूछा कि सिगनल डाऊन न होते हुए भी वे प्लेटफ़ार्म पर गाड़ियों को कैसे ले आये? तीनों ड्राईवरों ने अलग-अलग यही उत्तर दिया "स्टेशन मास्टर साहब! आप क्या मज़ाक कर रहे हैं। यह रहा आपके हाथ का लिखा हुआ मीमो, जो आपने सिगनल पर स्वयं हो आ कर मुझे दिया था। फ़कीर बाबा भौंचक्के रह गये।

[शेष क्रमशः